'साहब' को समर्पित तीन लघु कविताएं

अतुल सती

यह निश्चित है एक दिन वह जायेगा
यह बात
जितनी आश्वस्तकारी है
उतनी ही निराशाजनक भी कि, तब तक वह
और क्या क्या नहीं कर गुजरेगा ..!

××××

जैसे जैसे
लाशों के अंबार लग रहे हैं उसका अट्टहास सुन पड़ रहा है
वह बुद बुदा रहा है मंत्र की तरह लाशें हैं तो मुमकिन है ..!

×××××××

आंकड़े जितना बता रहे हैं उससे अधिक छिपा रहे हैं
गणित और संख्याएं
जो सत्य का पैमाना थीं कभी
छल छद्म और छुपाने का
औजार बने इस तरह उसने
गिरना सिर्फ गुरुत्व नहीं
गणित्व से भी सम्भव किया ।

मोदी : लोकतंत्र में शर्म कहां

हमारे समय की
यह नहीं है मुश्किल
कि उम्मीद नहीं है
बल्कि यह है कि
हत्यारे से उम्मीद है।

-पंकज चतुर्वेदी

क्या आपको लगता है मौत का आंकड़ा अगर और बड़ा होता तो सरकार पर या सीधा कहें मोदी पर कोई फर्क पड़ता । मान लीजिए आज के दिन सरकारी आंकड़ा तीन लाख है । गैर सरकारी इसका दस से पंद्रह गुना तक के अनुमान हैं । सरकारी आंकड़ा ही अगर तीस लाख या एक करोड़ भी होता तो मोदी जी की सेहत पर कोई फर्क पड़ता? क्या एक करोड़ लोगों के मरने पर मोदी जी आंसू बहाने के अतिरिक्त कुछ और करते? गुजरात में ही 2002 में अगर ढाई हजार की जगह 20 हजार होते क्या तब भी फर्क पड़ता? क्या इन आंकड़ों में धर्म जाति वर्ग के हिसाब से यदि संख्या ज्यादा कम होती तो फर्क पड़ता?

जिस आदमी का पैमाना यह हो कि कुत्ते का पिल्ला भी गाड़ी के नीचे आये तो दु:ख तो होता है । इस हिसाब से आंकलन हो तो उस आदमी को रत्ती भर फर्क नहीं पड़ेगा। संख्या कुछ भी हो और मरने वाला कोई भी हो ।

लोकतंत्र में इतनी तो शर्म होनी चाहिए कि अगर लोग यह कहें कि लाशों के ढेर पर, जब पूरा देश शोक और पीड़ा में है, तब अपने ऐशो आराम के लिए, सिर्फ अपनी जिद और सपने के लिए, हजारों करोड़ के निर्माण को रोक दिया जाय । पहले यह स्वयं होता अन्यथा इतनी तरह से लोगों ने मांग की तब यह होता । परन्तु नहीं । इस से अनुमान कीजिये कि देश के लोगों के साथ कुछ भी हो उसे कुछ फर्क न पड़ेगा । यह तो नोटबन्दी के समय ही स्पष्ट हो गया था । अब तो बस घटनाओं का दोहराव है आंकड़ों का फेर है ।

कोरोना की पहली लहर में पिछले साल और अभी इस दूसरी लहर के दौरान भी, हमने देखा मात्र मास्क न पहनने पर अथवा लाकडाउन के दौरान किसी आवश्यक कार्य से बाहर निकलने पर भी सामान्य लोगों पर महामारी कानून की विभिन्न धाराओं में लोगों पर मुकदमें हुए, जुर्माने हुए बल्कि सामाजिक प्रताड़ना, मारपीट तक आम लोगों से की गई। दूसरी ओर इसी महामारी में रामदेव उन्ही डॉक्टरों पर , इलाज पर, जो मन आये बक बक कर रहा है, जिन डॉक्टरों पर फूल बरसाए गए, ताली बजवाई गयी । किन्तु रामदेव पर न कोई मुकदमा है न कार्यवाही है । ठीक महामारी के बीच जब स्वास्थ्य कर्मी अपनी जान जोखिम में डाल कर अपना फर्ज पूरा कर रहे हैं तब वह उनका और पूरी पद्धत्ति का मखौल उड़ा कर लोगों की जान से खेल रहा है । किंतु उस पर कोई आंच नहीं आएगी । झूठ फरेब और बड़बोले दावों के साथ शुद्ध व्यापार करने वाला व्यापारी सिर्फ इसलिए बचाया जा रहा है क्योंकि उसने भगवा चोला ओढा है और वह मोदी का प्रचारक है । अन्यथा की स्थिति में वह जेल में होता ।

मृत्यु जीवन को बदल देती है। शमशान में उतपन्न दु:ख विराग को शमशान वैराग्य कहते हैं। कहते हैं शमशान वैराग्य शमशान तक ही रहता है , परन्तु ऐसा होता नहीं । इस बीच बहुत से लोग जो तमाम नाकामियों के गवाह होकर भी मोदी के मोह पाश से मुक्त न हो पा रहे थे, अपनों की,करीबियों की मृत्यु देख कर और कुछ स्वयं मृत्यु के करीब से गुजरकर इस मोहपाश से बाहर निकले हैं । उनके अनुभव झकझोरने वाले हैं । भाजपा के बहुत से नेता असहाय हो मृत हुए । एक जिन्हें स्वयं मोदी फॉलो करते थे गुहार लगा लगा मर गए , कोई सुनवाई न हुई । अब उनके परिवार वाले इसे समझ रहे हैं । बहुत से जो अब भी मोदी को मुक्ति की आखिरी उम्मीद माने बैठे हैं, और व्हाट्सऐप फारवर्ड कर भक्ति की शक्ति दिखा रहे हैं, किसी अपने की मृत्यु की प्रतीक्षा में है? कि जब तक आग स्वयं तक नहीं आ जायेगी हम बर्बादी का जश्न मनाए जाएंगे? तो फिर प्रतीक्षा करें तीन साल और हैं।

संपेरों मदारियों के देश की पहचान से तरक्की करते हुए, इस देश की पहचान बनी ; विश्व में आईटी (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) दक्ष इंजीनियरों वाले देश की , सबसे नौजवान लोगों के देश की , अपनी तमाम परेशानियों से लड़कर उभरते तरक्की करते देश के रूप में। ऐसी पहचान बनने में बहुत सी मेहनत खून पसीना लगा था। आज विश्व में हमारी पहचान तैरती लाशों वाले देश के रूप में बन गयी। लाशों के कफन नोचने वालों के रूप में बन गयी (उत्तरप्रदेश)। चिताओं के ढेर और उस ढेर से उठते धुंए के रूप में बन गयी । भारत अर्थात चिताओं और लाशों के ढेर वाला देश। यह पहचान बनाने में 18 घण्टे और सात साल लगे। लेकिन उस आदमी ने सत्ता का सफर ही लाशों से शुरू किया था। पहुंचना यहीं था। इसलिए जिन्हें यह गलतफहमी हो कि लाशों के ढेर से उनकी संवेदना पर कोई असर होगा तो उन्हें 2002 का गुजरात और गुजरात गौरव यात्रा और लाशों की नुमाइश और उसके जरिये वोटों की फसल को फिर से याद करना चाहिए । वह आंसू बहाकर जिम्मेदारी से फारिग हो चुके , शेष कमान व्यापारी रामदेव ने सम्भाल ली है... बहस अब लाशों पर, इलाज पर, सरकार की नाकामी पर नहीं... एलोपैथी होम्योपैथी आयुर्वेद पर होगी । मिशन एकम्प्लीशड।

-अतुल सेट

जनता मरती रहे, बस कफ़न पतंजलि का ख़रीद ले

राहुल कोटियाल

दिक्कत आयुर्वेद से नहीं, बाबा रामदेव और उनके अतीत से है...

निर्लज्ज बाबा अपनी आपराधिक हरकतों के चलते आज घिरने लगा तो एक बार फिर आयुर्वेद की आड़ में छिपना चाह रहा है. वो इस पूरी बहस को 'आयुर्वेद बनाम एलोपैथी' बनाकर खुद बच निकलना चाहते हैं.

लेकिन रामदेव के दावों पर उठ रहे सवाल आयुर्वेद पर सवाल नहीं हैं. आयुर्वेद पर तो इस देश को ऐसा विश्वास है कि झुमरी तलैया के किसी अनजान गांव का कोई गुमनाम जोगटा भी अगर आगे आके दावा करता कि उसने कोरोना की दवा खोज ली है, तो करोड़ों लोग उस दवा को लेने टूट पड़ते.

यक़ीन मानिए, ऐसे किसी अनजान व्यक्ति के दावों को बाबा रामदेव के दावों से ज़्यादा गंभीरता से लिया जा रहा होता..

और बाबा रामदेव को गंभीरता से न लेने के वाजिब कारण भी हैं. क्योंकि ये वही रामदेव हैं जिन्होंने कालाधन वापस आने के दावे किए थे, पेट्रोल 35-40 रुपए लीटर मिलने के दावे किए थे, घरेलू गैस का सिलेंडर ढाई-तीन सौ में मिलने की बात कही थीज

इन राजनीतिक मुद्दों को छोड़ भी दें तो ये वही रामदेव हैं जिन्होंने योग सिखाते-सिखाते लोगों को पहले बताया कि मैगी स्वास्थ्य के लिए कितनी घातक है और फिर खुद अपनी ही मैगी बेचने लगे. वो भी ऐसी जो परीक्षणों में नेस्ले की मैगी से

कहीं ज़्यादा घातक निकली.

ये वही रामदेव हैं जो बताते फिरते थे कि जींस की पैंट क्यों नहीं पहननी चाहिए. कहते थे इसे पहनने से पैरों में इतना पसीना आता है कि खुजली और इन्फ़ेक्शन हो जाता है. फिर ये अपनी ही जींस भी बेचने लगे. ये वही रामदेव हैं जिन्होंने कभी स्वदेशी नाम की गाय को दुहा तो कभी भारतीय संस्कृति के नाम पर उत्पाद बेचे. लेकिन निर्लज्जता देखिए, जो बाबा कहते फिरते थे कि 'फटी हुई जींस भारतीय संस्कृति पर आघात है' उन्होंने खुद फटी हुई जींस तक बेची. और इस पर जब उनसे सवाल पूछे गए तो बेहद निर्लज्ज अट्टहास के साथ कहने लगे कि 'हमारी वाली जींस थोड़ा कम फटी है.'

बाक़ी सब छोड़ दीजिए, कोरोना को ही लीजिए. यह महामारी जब दुनिया भर में पैर पसारना शुरू कर रही थी तो बाबा रामदेव दनादन सभी न्यूज़ चैनलों पर आधे-आधे घंटे के कार्यक्रम करने लगे. इस कार्यक्रम में बाबा पीछे होते और उनके उत्पादों की स्टॉल आगे होती. वे सबको बताते कि इस दौरान उनके कौन-कौन से उत्पाद लोगों को ख़रीदने चाहिए...

कोरोना की दवा के नाम पर इस वक्त तक उनके पास बेचने को कुछ नहीं था. तो पिछले साल के अप्रैल तक वो कोरोना वायरस को लोगों की नाक में तेल डालकर ही बहा दे रहे थे. कह रहे थे पेट में जाकर कोरोना वायरस मर जाएगा. लेकिन अब कथित दवा लेकर उतर आए हैं।

इस तरह से नियम-क़ानूनों को ताक पर रखते हुए बाबा रामदेव ने जो कुछ किया है, क़ायदे से उन पर भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के साथ ही आपदा प्रबंधन अधिनियम, खाद्य सुरक्षा और मानक (विज्ञापन और दावे) विनियम और ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) अधिनियम के तहत मुक़दमा हो जाना चाहिए था।

लेकिन जब सैंया भए कोतवाल तो डर काहे काज आख़िर सैंया को कोतवाल बनाने के फेर में ही तो 30 रुपए का पेट्रोल, तीन सौ का सिलेंडर और सौ दिन में कालेधन की वापसी जैसे दावे किए गए थे. अब जब सैंया कोतवाल बन गए हैं तो उन दावों की क़ीमत वसूली जा रही है।

जनता कल की मरती आज मरे, बस कफ़न पतंजलि का ख़रीद ले...

सियासी ठगों से सावधान रहें. सतर्कता और बचाव ही एकमात्र उपाय है

कृष्ण कांत

अगस्त 2019 की बात है. मिलावटी शहद और तेल बेचने वाले ठग्गू के सहयोगी बालकृष्ण ने भोजन किया और उनके सीने में दर्द शुरू हो गया. उन्हें बेहोशी छाने लगी. उनके स्टाफ ने उन्हें नजदीकी निजी अस्पताल पहुंचाया. वही अस्पताल जहां पर ठग्गू बाबा के अनुसार 'बेकार एलोपैथी' वाले डॉक्टर होते हैं. 15 मिनट उपचार के बाद अस्पताल के डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिए. इसके बाद उन्हें एम्स ऋषिकेश लाया गया. बालकृष्ण के साथ ठग रामदेव भी मौजूद थे. एम्स निदेशक प्रो रविकांत की निगरानी में बालकृष्ण का उपचार हुआ. उस समय एक दर्जन डॉक्टर मौजूद थे. आज ये ठग कह रहा है कि एलोपैथी बेकार और दिवालिया है. आज ये ठग डॉक्टरों की मौत और उनके साइंस का उपहास कर रहा है.

बीजेपी सांसद प्रज्ञा ठाकुर ने दावा किया कि वे गौमूत्र का सेवन करती हैं इसलिए उन्हें कोरोना नहीं हुआ. जबकि मार्च में ही इन्हें सांस लेने में तकलीफ हुई थी तो इनको भोपाल से एयरलिफ्ट करके मुंबई ले जाया गया था और कोकिलाबेन अस्पताल में भर्ती कराया गया था. आतंकवाद के आरोप में जेल में थीं तो लगातार इनका इलाज चलता था. जो गांधी का नहीं हुआ, वह जान बचाने वाले डॉक्टरों का क्या होगा?

अनिल विज हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री हैं. कल उन्होंने ट्वीट किया, "हरियाणा में कोविड मरीजों के बीच एक लाख पतंजलि की कोरोनिल किट मुफ्त बांटी जाएंगी। कोरोनिल का आधा खर्च पतंजलि ने और आधा हरियाणा सरकार के कोविड राहत कोष ने वहन किया है।"

इसी ट्वीट पर पत्रकार दिलीप मंडल ने पूछा, "आपने कोरोना होने पर अपना इलाज मेदांता हॉस्पिटल, गुड़गाँव में क्यों कराया? घर पर रहकर कोरोनिल क्यों नहीं ली?" जाहिर है कि सवाल लाख टके का

है लेकिन इसका जवाब नहीं आना है. कोरोना होने के बाद अनिल विज पहले पीजीआई रोहतक और बाद में गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती हुए थे.

गृह मंत्री अमित शाह को कोरोना हुआ तो वे गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती हुए थे और एम्स के डायरेक्टर रणदीप गुलेरिया के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम मेदांता अस्पताल पहुंची थी.

कोई भी बड़ा नेता बीमार पड़ता है तो उन्हें देश का सर्वोत्तम इलाज मिलता है और ये ठीक भी है कि उस दौरान वे मूत्रोपचार नहीं करते, वरना जान ही चली जाए. दिक्कत ये है कि वे आम आदमी को मूत्रोपचार की सलाह देते हैं.

आम आदमी बिहार से दिल्ली आता है. एम्स के बाहर महीनों सड़क पर पड़ा रहता है. किसी नेता ओर वीआईपी का पेट भी झरने लगे तो तुरंत एम्स में बिस्तर लेता है, डॉक्टर और उच्च कोटि की चिकित्सा लेता है. ठगों का यही गिरोह आपको कोरोनिल, गोबर, गोमूत्र और चूरन चटनी खाने की सलाह देकर उल्लू बनाता है. वह परंपरा और भारतीयता के नाम पर आपको घटिया सामान बेचकर अपना खजाना भरता है.

वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि आप बेहतर अस्पताल और चिकित्सा सुविधा की मांग न करें. इन ठगों को पहचानिए, अच्छी चिकित्सा सुविधा की मांग कीजिए और अपने डॉक्टरों पर भरोसा कीजिए.

जो किसान सदियों से गोपालन कर रहे हैं, वे न तो कभी गोबर खाते हैं, न कभी गोमूत्र पीते हैं. जिन्हें लगता है कि गाय, भैंस, कूकुर और सूअर के उच्छिष्ट में अमृत है, वे ऐसा करने को आजाद हैं. आप उनके चक्कर में पड़ेंगे तो आपकी जान जा सकती है.

नोट- आयुर्वेद के अच्छे या बुरे होने का प्रश्न ही नहीं है. वह हमारी पारंपरिक पद्धति है, जिसके लिए हमें किसी ठग से कुछ नहीं सुनना. आयुर्वेद के लिए भी अच्छे डॉक्टरों की सलाह लें.